Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN : 2321- 4708
May 2019, Year - 5 (73)
Paper ID : RRJ000031

उपन्यासकी विकासयात्रा

डॉ. अश्विन के. कुहादिया

साहित्य मानव जीवन का अभिन्न अंग है। साहित्य का विस्तार असीम है। उपन्यास साहित्य की उन्ही विद्याओ में से एक है। उपन्यास ऐसी साहित्यिक विद्या है, जो जीवन के सर्वाधिक समीप है इस विद्या में समाज एंवम मानव जीवन का प्रायः सबसे अधिक व्यापकता से चित्रण होता है। इसलिए उपन्यास साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय विद्या है।

मानव जीवन के गोपनीय रहस्यों, जैसे मानसिक संघर्षो एंवम भावनाओ की घटनाओं को उपन्यास में चित्रित किया जाता है। मानव–जीवन को सहज एवम विस्तृत विश्लेषण करने का सामर्थ्य उपन्यास विद्या में विद्यमान है।

उपन्यास का व्युत्पतिमूलक अर्थः–

'उपन्यास' शब्द की व्युत्पति के विषय में अनेक मतभेद है। विद्वानो का एक वर्ग संधिविग्रह के आधार पर इसको ''उप'' और ''नि'' पूर्वक ''अस'' धातु में ''धज'' प्रत्यय जुडने से व्युत्पन्न हु आमानते है।

विद्वानो के दूसरे वर्ग के अनुसार – ''उप'' का अर्थ हे समीप और ''न्यास'' का अर्थ है ''रखना'' इसमें स्टष्ट किया गया है की ''जीवन की प्रतिछाया को पाठकों के सम्मुख या समीप रखना ही उपन्यास का कार्य है।''

मुख्यतः 'उपन्यास' शब्द दो शब्दों के योग से व्युत्पन्न हु आ है। वे शब्द है 'उप' तथा 'न्यास' इसका सामुहिक अर्थ निकट रखी वस्तु से लिया जा सकता है। चूंकि सभी वस्तुएँ मानव से संबधित होती है। अतः उपन्यास में भी मानव जीवन से संबधित तमाम बातों की चर्चा होती है। डॉ. रणवीर रांग्रा कहा है, ''उपन्यास वह रचना है जिसमें जीवन व जगत के अनेकाअनेक पक्षों का प्रक्षेपण होता है।''

२. उपन्यास के विभिन्न अर्थः–

''उपन्यास'' शब्द भिन्न–भिन्न भाषाओ मे भिन्न–भिन्नं रुपो में प्रयुक्त हु आ है किंतु आज हिन्दी साहित्य के लिए रूढ. हो गया। अंग्रेजी में इसे ''नावेल'', बंगाली में उपन्यास, मराठी मे 'कादम्बरी', तथा गुजराती में 'नवलकथा' नाम से अभिहित किया गया है।

संस्कृत के लक्षण ग्रंथो में नाटक की ''निर्वाहण सन्धि'' के चौदह अंगो में तीसरा अंग उपन्यास कहलाता है। संस्कृत में उपन्यास की व्याख्या दो अर्थ में की गई है। ''एक के लिए 'उपन्यास प्रसादनम' कहा गया है। जिसका अर्थ प्रसन्न करना, आनंद देना होता हैं। दूसरे के लिए 'उपत्तिकृतो–हार्थ' का प्रयोग हु आ हैं। इसका तात्पर्य किसी भी विषय को युक्तियुक्त ढंग से प्रस्तुत करना है।''

इन दोनो व्याख्याओं के आधार पर यह अनुमान किया गया है – ''उपन्यास में प्रसन्नता देने की शक्ति तथा युक्तियुक्तरुप में अर्थ को प्रस्तुत करने की प्रवत्ति के कारण इस प्रकार की कथा – प्रधान रचनाओं का नाम 'उपन्यास' पडा हों।''

उपन्यास का स्वरूप संस्कृत के पश्चात ''पाली'' में जातक कथाओ के रूप में, अपभ्रंश में कथा एंव चरित काव्यों के रूपों में होते हु एहिन्दी उपन्यास के रूप में आया हैं।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-73-may-2019/RRJ000031

ISSN : 2321- 4708
May 2019, Year - 5 (73)
Paper ID : RRJ000031

उपन्यास का स्वरूप में नावेल रूप में जाना जाता है । यह अंग्रेजी में 'लेटिन' शब्द नोवस से व्युत्पन्न होकर आया है । कुछ लोग इसे फ्रेंच के ''नोवो'' से व्युत्पन्न मानते है, 'नोवस' अथवा 'नोवो' का शाब्दिक अर्थ नवीनता से लिया जाता है ।

गुजराती में उपन्यास के लिए 'नवलकथा' का प्रयोग किया गया है । 'नावेल' से नवल लेकर कथा जोडकर उसे इसे बनाया है। ध्वनि साम्य के कारण 'नवल' शब्द को अपनाया गया। चूंकि 'नवल' का बोध नही हो सकता इसलिए कथा जोडकर उसे पूरा किया गया हैं । गुजराती की 'नवल कथा' अंग्रेजी के 'नोवेल' का रूप हैं जो शाब्दिक रूप से ग्रहण कर लिया गया है । दोनो साहित्य की एक ही विद्या उपन्यास को घोषित करतें हैं ।

आधुनिक काल में उपन्यास के प्रयोग बांगला में सबसे पहले दो बार हुए। एक बार १८५६-५७ में सबसे पहले ऐतिहासिक उपन्यास के नाम से १८६१ में 'एक अदभुत उपन्यास' के रूप में। १८६४ में बंगाल की पत्रिका 'बंग दर्शन' में उपन्यास शब्द का प्रयोग हुआऔर इसके बाद बंगाल में यह शब्द प्रचलित हो गया।

हिन्दी में सबसे पहले १८७१ में 'मनोहर उपन्यास' नाम में यह शब्द प्रयुक्त हुआ परंतु विद्वानो ने इसे नही माना ।

अतः यह निश्चित है कि उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति से इसकी परिभाषा का विकास हुआ है । यों कहा जा सकता है की उपन्यास के सही अभिप्राय को भारतीय साहित्य में उसकी व्युत्पत्ति द्वारा समझ लिया गया है, इसमें मानव जीवन शब्द छुपा हुआ है और मानव जीवन के चित्रण के कारण यह मानव–जीवन की निकटम विद्या है।

उपन्यास की परिभार्षाए

क. उपन्यास–हिन्दी विद्वानों की दृष्टि में

उपन्यास विद्या इतनी व्यापकता एवम वैविध्य लिए हुए है कि इसे किसी परिभाषा में बांधना बहुत कठिन कार्य हैं । उपन्यास की अनेकाअनेक परिभार्षाए प्रचलित है, जिनमें दृष्टि की विभिन्नता स्पष्ट दृष्टिगत होती है । उपन्यास की रूपरेखा को स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानो ने अपने–अपने दृष्टिकोनों को रखा हैं ।

उपन्यास और जीवन में गहरा सम्बन्ध मानते हुए डॉ. श्यामसुंदर दास ने कहा हैं – ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा कहा है ।''

उपन्यास को मानव जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए मुंशी प्रेमचंद कहते है–''उपन्यास ग्रंथ साहित्य का वह अंग है जो मानव के चरित्रों का चित्र उपस्थित करते हुए उसके जीवन पर प्रकाश डालता है, और रहस्यों का उदघाटन करता है ।''

हिन्दी के प्रतिनिधि साहित्यकारों ने उपन्यास के मूल तत्व की विवेचना करते हुए उपन्यास को मानव चरित्र पर प्रकाश डालने वाला और उसके रहस्यों को खोलने वाला बताया है । भागीरथ मिश्र के अनुसार – ''युग की गतीशील पृष्ठ भूति पर सहन शैली में स्वभाविक जीवन की पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ काव्य उपन्यास कहलाता है ।''

उपन्यास का मानव जीवन की भावनाओं को और चिंताओ की अभिव्यक्ति का साधन मानतु हुए डो. त्रिभुवन सिंह कहते है, ''साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास एक ऐसा उपक्रम है, जिसके द्वारा सामुहिक मानव जीवन

ISSN : 2321- 4708
May 2019, Year - 5 (73)
Paper ID : RRJ000031

अपनी समस्त भावनाओं एंव चिंताओ के साथ संपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो सकता हैं । मानव जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अधिक अवकाश उपन्यासों में मिलता हैं उतना अन्य साहित्यिक उपकरणों मे नहीं ।''डो. त्रिभुवनसिंह का दृष्टिकोण यर्थाथवादी है ।

उपन्यास समाज की आलोचना एंव विवेचना प्रस्तुत करता है । समाज की यर्थाथ स्थिती से अवगत कराना तथा उसमें नई त्रुटियों का निवारण करना उपन्यास का कार्य है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उपन्यास की व्याख्या प्रस्तुत करते हु एलिखा है ''वर्तमान जगत में उपन्यासों की बढी शक्ति है । समाज का जो रूप पकड रहा है, उपन्यास उसका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण की नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठिक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न करते हैं – – – – – – लोक या कीसी जन समाज के बीच काल की गती के अनुसार जो मुढ और चित्य परिस्थितिर्या खडी हो जाती है, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी कभी विस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यास का काम है ।''

उपन्यास बहु उद्देशियहोता है उसमें परिस्थितीयों के सजीव चित्रण की प्रबल शक्ति विदयमान रहती है। यशपालजी ने उपन्यास को समाजधारा एवम विचारधारा के तारतम्य को प्रगट करने वाली विद्या माना है । डॉ. गुलाबराय उपन्यासके विषय में कहते है, ''उपन्यास कार्य–करण श्रृखला में बंधा हु आ वह गदय कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचदगी के साथ वास्तिविक जीवन का प्रतिनिधीत्व करने वाले व्यक्तियों से संबधित वास्तविक का काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव–जीवन के सत्य का उदघाटन किया जाता है ।''

अतः मानव जीवन के विविध पक्षों का उदघाटन इस साहित्यांग द्वारा होता है । उपन्यास मानव जीवन का चित्र फलक है, जीस पर उसका चित्र चित्रित होता है ।

ख. उपन्यासः– (पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में)

पश्चिमी विद्वानों ने उपन्यास को मानव जीवन से संबंधित माना है । सुप्रसद्धि अंग्रेज समालोचक राल्फ फाक्स उपन्यास को विभिन्न विविधताओं से पूर्ण मानवीय जीवन की सर्वागीण एवम सफलतम अभिव्यक्ति का साधन मानते है । उपन्यास को मानव जीवन का गदय मानते हु एकहते है, ''मानव के समग्र जीवन आंतरिक एंव बाह्य को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य उपन्यास द्वारा संपन्न होता है । ''

उपन्यास कला के प्रमुख तत्वों पर जोर देते हु ए एडिथ हर्वाटन ने कहा है, ''उपन्यास एक कल्पित आख्यान है, जिसमें सुंदर कथानक एवम भली प्रकार से चित्रित पात्र होते है ।''

सुंदर कथानक के कदाचित उनका अभिप्राय सहज, सुबोध और रोचक कथानक से हैं । भलीर्भांति चित्रित एवम सुंदर पात्र वे है, जो विभिन्न पृथक आकृतिर्यां धारण करके पाठको के निकट सजीव हो उठते है पाठक उन पात्रों को अपनेपन के भाव से देखने लगते है । प्रिस्टले ने उपन्यास शब्द की व्यापकता का समर्थन करते हु ए यर्थाथ जीवन के साथ उसकी निकटता घोषित की है । उनके अनुसार, ''उपन्यास साहित्य का प्रमुख अंग है, जिसकी रचना गदय में होती है जिसके पात्र कल्पना की रेखाओं के सहारे घटनाओं में वर्णित होते है । उपन्यास सृष्टि का दर्पण है जिसका क्षेत्र अन्य साहित्यीक विद्याओ की अपेक्षा विस्तृत है ।''

ISSN : 2321- 4708
May 2019, Year - 5 (73)
Paper ID : RRJ000031

पात्रों की आंतरिक मनोभूमी के उदघाटन को उपन्यास का प्रमुख गुण मानते हु एटी.डब्लू. बीच का कथन है ‘‘उपन्यास में पात्र आंतरिक आत्मा का स्वरूप कथा में वर्णित क्रिया कलाप द्वारा प्राप्त होता हैं और क्रिया–कलाप का उदभव पात्र की आंतरिक मनोभुमि पर होता है । ‘’ बीच का यह दृष्टिकोण मनोविज्ञानिक है ।

पाश्चात्य विद्वानों की एंवम हिन्दी विद्वानों की उपन्यास सम्बन्धी धारणा क अध्ययन करने के उपरांत एक बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है कि सभी विद्वानों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उपन्यास को जीवन की अनुकृती के रूप में स्वीकार किया है । उन्होने अपनी – अपनी परिभाषाओं में स्पष्ट किया हैं की उपन्यास में जीवन और जगत के क्रियाकलाप का लेखा–जोखा विदयमान है । अतः स्पष्ट है की समाज की वास्तविक घटनाओं को कल्पना के सहयोग से एवम चरित्रों के माध्यम से जो रूप प्रदान किया जाता हैं, वही उपन्यास कहलाता हैं ।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-73-may-2019/RRJ000031